

अध्याय-5

डॉ० प्रभुनाथ सिंह

साहित्य आ राजनीति के एके कलम से रेखांकित करे वाला एगो जानल-मालन अर्थशास्त्री आ भोजपुरी आंदोलन के लमहर योद्धा डॉ० प्रभुनाथ सिंह के जनम सारण जिला के मुबारकपुर गाँव में 2 मई 1940 के भइल रहे। छात्रजीवन से ही पत्र-पत्रिका में लिखे के काम करत रहिन। कहानीकार, कवि आ लेखक का रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कइनी। प्रभुनाथ बाबू अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, विश्व भोजपुरी सम्मेलन से जुड़ल रही आ बिहार में विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू करावे के श्रेय भी मिलल। 'भैरवी' के सम्पादन का साथे ही इ हमार गीत (काव्य संग्रह), गाँधीजी के बकरी (निबंध-संग्रह), हमार गाँव:हमार घर (कहानी, निबंध संस्मरण-संग्रह) पड़ाव (कहानी आ ललित निबंध-संग्रह) इहाँ साहित्यिक कृति ह।

राजनीति का क्षेत्र में दू बार विधायक रहत बिहार के वित्त राज्यमंत्री तक के पद के सुशोभित कइनी। कई शैक्षणिक संस्था के स्थापना इहाँ महत्वपूर्ण शैक्षिक उपलब्धि बा। 30 मार्च 2009 के भोजपुरी आंदोलन के एह सेनापति के निधन भ गइल।

विषय प्रवेश

प्रस्तुत कहानी उपेक्षा के दँश झेलत एकाकीपन के भोक्ता के रूप में माई के व्यथा के कहानी बा। एह मनोवैज्ञानिक कहानी में माई के कष्ट के कारण के अनुभव करत लेखक एगो मनोवैज्ञानिक उपचार करे के प्रयास कइले बा। ओह प्रयास में ओकरा सफलता मिलल आ जे रोग डॉक्टर ना मेटा सकल ऊ बेटा का रूप में लेखक अपना श्रद्धा, प्रेम आ सेवा से रात भर में मेटा के बेटन के मातृ-सेवा के संदेश दे रहल बा।

माई

रात के एक बजल होई। अचके में नींद टूट गइल। केतनो जतन करीं नींद आवे के नाँव ना लेव। एह करवट से ओह करवट फेरत मन अनसा गइल। आँख बंद करीं, बाकिर ऊ सटे ना। एही बीच मन में एगो सोच समा गइल। नींद आउरू उचट गइल। घर से माई आइल रहे। ओकर तबीयत ठीक ना रहे। लोग कहेला कि मतारी के प्रेम छोटका बेटा में रहेला आ बाप के बड़ बेटा में। अइसन शायद एह से होला कि छोट बेटा के कम उमिर के चलते प्यार आ स्नेह के ज्यादा जरूरत हेला, जवन मतारी ही दे सकेले आ बाप का बुढ़ापा में लाठी के सहारा के जरूरत होला, जवन बड़ बेटा ही हो सकेला। हमरा छोट भाई में तनी लड़िकाई जादे बा। माई के तनी कम गुदानेला। अइसन नइखे कि अनादर करेला। ओकरा कहला-रहेला में तनी कम रहेला। कुल भाई से ज्यादा भरोसा माई का हमरे में रहेला, यद्यपि कि हम ओकर बड़ बेटा बानी। ओकर दवा-दारू गाँव पर भी हमार छोट भाई करा सकत रहे, लेकिन ऊ टुघुड़ल-टुघुड़ल पटना पहुँच गइल। ईहे कि पटना में आपन मकान बड़ले बा, बेटा के जान-पहचान के कवनो कमी नाहींये बा, अच्छा डाक्टर के देखा के दवा करा दीहें, त रोग जल्दी भाग जाई।

पटना के मकान में से तीन कमरा अपना खातिर राख के आउर भाड़ा पर लगा देले बानी। एक कमरा में बेटा लोग रहेला। एक कमरा में हम आ हमार औरत-हमनी दुनू परानी आ एक कमरा, ड्राइंग रूम बा, जवना में आइल-गइल लोग के पड़ाव रहेला। जगह के सकेता से भाई के खटिया डाइनिंग स्पेस में लागल रहे। सारा लोग- अपन विरान- घर का अंदर सुतल रहे आ माई घर का बाहर खाली जगह में। मन में विचार के तूफान एह से उठल रहे कि कहीं माई ई त ना सोचत होई कि अपने सब लड़िका-फड़िका के लेके घर में सुतल बा आ हमरा के दुआरी पर सुतवले बा। का बुढ़ापा में बाप-मतारी जगह घर से बाहर होला आ जेकरा के ऊ लोग जनमवले बा, ओकर भीतर? का लइकन का सेआन हो गइल पर बाप-मतारी बहारन हो जाले, जवना के झाड़ू से बहार के दुआरी पर लगा दिआला? ओकरा से पैदा भइल गाछ का जरी छाँव में ओकरा सुस्ताए के कवनो

अख्तियार नइखे? का बुढ़ापा में बाप-मतारी के मूल्य घट जाला कि ऊ लोग छूतिहर घइला लेखा कवनो कोना में ओठंगा दिआला? आउरी लोग सोना-चाँदी लेखा घर का अंदर बक्सा में बंद रहेला कि कहीं ऊ लोग लुटा ना जाव? एह तरह के सोच दिमाग के झोरत रहे। अइसन बुझाला कि केहू तड़ा-तड़ जुतिया रहल बा। बेचइनी बढ़त जात रहे। अब आँख बंद होखे के भी नाँव ना लेव। आँख खुल के छत पर टिकाल रहे, छत जइसे परदा होखे आ सेच के एक-से-एक सीन ओकरा पर आवत जात होखे। अपराध-बोध से कपार भारी लागे लागल।

इयाद आवे लागल गाँव-घर के कुछ परिवार आ ओह परिवारन में बाप-माई के दुर्दशा। रामलखन आ शिवरतन दूनु भाई अलगा भइले, त पंच लोग तय कइल कि रामलखन के माई दिन में एक बेटा किहाँ आ रात में दोसरका किहाँ भाँजा बान्ह के खइहें। एक-एक टुक कपड़ा साल में अपना माई के ई लोग देहल करी। रामलखन आ शिवरतन के मेहरारू लोग यदि ठीके रहीत, त अलगा-बिलगी के ई नउबने ना अइत। दूनु एक-स-एक काढ़ल, गहरन के जगावल, झगड़ालू आ कर्कशा रहीसन। सास बुझास जइसे एकनी के सारा धन चर जइहें। बसिया भोजन, लइकन के छोड़ल-छाड़ल जूठ अब कुत्ता आ मवेशी के ना दे के सास के आगा परोसाये लागल। एक दिन सुबह गाँव के लोग देखल कि रामलखन के माई घर का बगल के इनार में डूब के मरल पड़ल रही। उनकर लाश फूल के उतराइल रहे। पतोह लोग के भरसन रहे कि माई का अब लउकत ना रहल ह, निकसारे गइल रही, अंधार में ना सूझल होई, कहीं से कुआँ में ढिमिला गइल होइहें।

एगो हमार संघतिया बाड़े साथ ही विश्वविद्यालय में प्राध्यापक। बात 30 बरिस पहिल के ह। अभी नया-नया हमनी जोआइन कइले रहीं। उनका बड़कन बने आ देखावे के बेमारी रहे, आजहूँ बा। उनकर माई घर से आइल रही। कुछ मित्र के साथे एक दिन उनका डेरा पर हमनी बइठल रहीं। पकौड़ी आ चाय चलत रहे। एही बीच आँगन में हम एगो बूढ़ औरत के देख के पूछनी, 'रऊरा घर में एगो बूढ़ी औरत के लउकत बा जी?' तपाक से अपना आवाज के ट्यूनिंग तनी मधिम कर के ऊ बतवले कि नोकर कवनो टिकत नइखे, एह से एगो दाई ऊ रखले बाड़े। बाद में पता लागल कि ऊ उनकर मतारी रही। चूँकि ऊ पुरान विचार के अनपढ़, गँवार आ गँवई आ गँवई औरत रही, एह से उनका के ऊ दाई बना देहले। एह बात के साबित करे के उनकर सोच होई कि एगो गँवई औरत के उनका अइसन मॉडर्न आदमी के माई होखे के हैसियत ना हो सके।

रामबालक सिंह हमरा गाँव के एगो नामी-गिरामी आदमी रहले। अपना जमना में उनकर चलती रहे। कलकत्ता में एगो फैक्ट्री में बाबू रहन। अपार धन उपरजले, गाँव पर आ कलकत्ता दूनु

जगह कोठी बनवले। उनका चार लइका, चारो के खूब पढ़ा-लिखा के कवनो के इंजीनियर, कवनो के डाक्टर आ कवनो के मास्टर बना दिहले। सभन के बिआह-शादी हो गइल, नोकरी हो गइल, सभ पूत आना-अपना मेहरी का साथे नोकरी पर शहर में, गाँव में बँच गइले बूढ़ बाप आ मतारी। कुछ दिन बाद रामबालक सिंह भी मर गइले। बाँच गइली बस बुढ़ियो, गाँव के विशाल कोठी में अकेले। देह-हाथ पड़ गइला पर केहू एक लोटा पानी तक देबेवाला ना। कवनो बेटा उनकर भार उठावे के तइयार ना भइले। जेकर जिनिगी शहर में बितल, चार कमासुत पूत के जे माई रहली, रामबालक सिंह के मुअला का बाद कवनो बेटा के साथे उनकर गुजारा ना हो सकल। दू बरिस के बात ह। एक दिन बेर बितला पर उनकर दरवाजा ना खुलल। गाँव-पड़ोस के औरत सोचस कि बुढ़िया के तबीयत ठीक ना होई; संशय बढ़ल, त लोग केंवाड़ी ढकढकावल। भीतर से जब कवनो सुम-गुम ना मिलल, त दरवाजा तुड़ाइल। पावल गइल कि पनरोही पर बुढ़िया मरल पड़ल बिया। सब बेटा लोग खबर पा के परिवार का साथे आइल। बड़ा धूम-धामे श्राद्ध भइल। हजारो रूपया खर्चा भइल। श्राद्ध खत्म होते-होते आपस में बँटवारा लेके सिर फुटल के नौबत आ गइल। संपत्ति में बखरा त सब बेटा-पतोह लोग के रहे, लेकिन बाप-मतारी के ढोये के हिस्सा केहू के ना।

लोग चर्चा करेला कि जमाना बदल गइल। परिवार के परिभाषा बल गइल। पहिले परिवार के मतलब रहे बाप-मतारी, भाई-भउजाई, चाचा-चाची, भतीजा-भतीजी, सबसे एक साथ मिल के गुजर-बसर कइल, सुख-दुख बाँटल, आपस में सहयोग, मिल्लत, सद्भाव आ एकता। अब परिवार के माने हो गइल बा आपन मेहरारू आ बेटा-बेटी। आज के परिवार में बाप-मतारी से अँडस हो जात बा। अवलाद पैदा कर के भी ऊ लोग बेमउआर बा। अइसन परिवार के आधुनिक परिवार कहल जा रहल बा। ठीक, जमाना बदल रहल बा, शहर के संस्कार गाँव पर हावी बा। गाँव शहर का ओर भाग रहल बा। गाँव के संस्कार आ संस्कृति विकृत हो रहल बा। शहर में मँह-मँह करत बा, गाँव उजाड़ हो रहल बा। गाँव के धन शहर में लाग रहल बा। गाँव कंगाल हो रहल बा गाँव के माने हो गइल बा- उजड़ल छप्पर, धूल-कीचड़ से भरल सड़क, बूढ़-पुरनिया, बेरोजगार, पिअक्कड़ आ बेमउआर लोगन के वास। होली, फगुआ आ चइता गावेवाला लोग अब नइखे मिलत। कुछ दिन में कथा-पूजा करावेवाला पंडित भी ना भँटाई। आधुनिकता का चकाचौंध में बाप-मतारी के ढोअल बहुत भारी लागत बा, जवना कोख से आदमी जनम लेहल, ऊ कोख कवनो गड़हा अस लागत बा, जवना के पानी सड़ के महक उठल बा आ ओकरा से दूर रहल स्वास्थ्य का दृष्टि से वाजिब बा। आधुनिक परिवार में सृष्टि के सोर भुला गइल बानि जइसे कि आँवा में नादे भुला गइल।

सोच के क्रम में ई सब दृश्य सामने से गुजर रहल बा। एही में कहीं हम अपना के खोज रहल बानी, कहीं माई के। एगो बेग आइल, झट से ओढ़ना फेंक के बिछावन से उठ के चल देहनी। केंवाड़ी खोल के माई के खटिया के नजदीक पहुँचनी। माई मुसेहरी के भीतर खटिया पर बइठल रहे। ओकरा आँख में नींद ना रहे। शायद मतारी-बेटा के सोच के दिशा एके रहे, पूछनी-‘माई! तबीयत कइसन बा? नींद नइखे आवत का?’

‘ना बबुआ, तबीयत ठीक बा, मथवा भारी लागत बा, कुछ भय अइलसन बुझाये लागल ह, त नींद टूट गइल ह। अब नींद नइखे आवत, त जाग के बिहान करत बानी।’-माई एकसुरे ई सारा बेआन कर गइल।

दरवाजा खट-खटा के ओह कमरा के खोलवनी, जवना में बेटा लोग सुतल रहे। ओह लोग के जगा के माई वाला जगहा पर कइनी आ माई के कमरा के भीतर सुते के जोगाड़ कइनी। माई ना-नुकुर करत रह गइल, लेकिन हम मननी ना। कमरा में माई के ठीक से सुता के ओकर कपरा मलनी आ पाँव दबवनी, त धीरे-धीरे नींद आ गइल। बेटा लोग के समझवनी- ‘माई के कबहूँ बाहर मत सुतइल लोग, खूब सेवा करिह लोग, जइसन हमनी अपना बाप-मतारी के साथे करब, ओइसहीं हमनी के साथे हमनी के अवलाद करी।’

सुबह आठ बजे तक ना हमार नींद खुलल, ना माई के! उठ के सीधे माई का कमरा में गइनी। जगा के ओकर हाल-चाल पूछनी। माई के चेहरा पर चमक रहे। रोग के बवनो झलक ना दिखाई पड़त रहे। माई बतवलस, -‘बबुआ, तबीयत आज बहुत ठीक बा। डाक्टर के दवा सूट कइले बा। शरीर में ताकत महसूस हो रहल बा।’

माई के नीरोग होखे में अब कवनो कोर-कसर ना रहे। सही दवा रात ओकरा बेटा का हथे से मिलल रहे। रोग रहे ई सोच, कि ओकरा के देखे-सुनेवाला केहू बा कि ना? जवन गाछ ऊ लगवले बिया, ऊ छायादार बा कि टूँठ-छितनार? अवलाद का हृदय में ओकर कवनो स्थान बा कि ना? बेटा-पतोह खातिर ओकरा जीवन के कवनो उपयोग आ सार्थकता बा कि ना? माई मुसकात कहलस, ‘बबुआ बड़ा बढ़िया डाक्टर से देखवले बाड़े। अब हमार अरदोआय बढ़ गइल। नाती-परनाती देख के मरबा।’

माई जवन ना कहे के चाहत रहे, ऊ हम जानत रहीं। जवना दवा के तलाश में पटना आइल रहे, ऊ ओकरा मिल गइल रहे। शायद ऊ दवा गाँव में हमार छोट भाई देवे के भुला गइल रहन।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'माई' कहानी के लेखक के ह?
2. 'माई' कहानी पढ़ला से कवन भाव उत्पन्न हो रहल बा?
3. 'माई' अपना कवना बेटा के पास रहत रही?
4. 'माई' के कबहूँ बाहर मत सुतइह लोग। ई के कहले बा?
5. माई पहिले कहाँ सुतत रही?
(क) घर के भीतर (ख) ड्राइंग रूम में
(ग) छत पर (घ) कहीं ना
6. 'माई' बाद में कहाँ सुते लगली?
(क) चुहानी में (ख) चउकठ प
(ग) दुमुँहा में (घ) घर के भीतर
7. 'हमार अरदोआय बढगइल' के कहल?
(क) माई (ख) बाबूजी
(ग) रामलखन (घ) शिवरतन
8. माई गाँव से कवना शहर में आइल रहलीं?
(क) पटना (ख) आरा
(ग) दिल्ली (घ) एह में से कहीं ना
9. छोट भाई कहाँ रहत रहन?
(क) पटना (ख) गाँव
(ग) शहर में (घ) सीवान

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. परिवार से रउआ का समझत बानी?
2. बड़का भाई अपना लइका लोग से का कहलन?
3. आधुनिक परिवार के का दोष बा?
4. माई सबसे बेसी केकरा के मानत रहीं आ काहे मानत रही?
5. भाई आ बेटा भरपूर कहिआ सुतल लोग।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'माई' कहानी में कहानीकार सबसे बेसी केकरा चरित्र के उकेरले बा?
2. व्यक्तित्व के विकास में बाप-मतारी के का योगदान होला?
3. मित्र के पास पत्र लिख के माई कहानी के महत्ता पर प्रकाश डालीं?

सप्रसंग व्याख्या

1. "माई के कबहूँ बाहर मत सुतइह लोग, खुब सेवा करिह लोग"
2. "बबुआ बड़ा बढ़िया डॉक्टर से देखवले बाड़े। अब हमार अरदोआय बढ़गइल।"

परियोजना कार्य

'माई' कहानी के बड़का लइका के चरित्र लेखा अपना गाँव में केहू होखे त ओकर चरित्र चित्रण करीं ।

शब्द संपदा

टुघुड़ल	-	धीरे-धीरे गइल
ड्राइंग रूम	-	बइठका
डाइनिंग स्पेस	-	भोजन करे के जगह

छूतिहर	-	गंदा चीज
घड़ला	-	घड़ा
ढिमिलाना	-	लुटुक के गिरल
संघतिया	-	साथ रहेवाला, दोस्त, इयार
मधिम	-	कम
मॉडर्न	-	आधुनिक
कोठी	-	बढ़िया मकान
मेहरी	-	मेहरारू, औरत
ढकढकावल	-	खटखटावल, खटखटा के
पनरोही	-	एगो स्थान 'जहाँ' पानी गिरावल जाला
कंगाल	-	बहुत गरीब
ओढ़ना	-	शरीर ढकेवाला चादर